छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख

Q. छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?
→ कवि के अनुसार जिस प्रकार खेत में बीज गिरकर अंकुरित होता, पुष्पित और पल्लवित होता है और बढ़ाई के समय वह कृषक के मन को हर्षित कर देता है; उसी प्रकार एक कागज पर जब किसी कवि की रचना शब्दबद्ध होती है, तो उससे एक अलौकिक रस-धारा फूटती है। साहित्य का महत्व कभी कम नहीं होता, वह हमेशा कालजयी होती है। लाखों लोग उसका रसास्वादन करते हैं, इसीलिए कवि ने उसे छोटे चौकोने खेत के समान कहा है।

Q. रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या है?
→ रचना के संदर्भ में अंधड़ से अभिप्राय कवि के मन के भावों से है और बीज से अभिप्राय शब्द (भाषा) से है।

Q. रस का अक्षयपात्र से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?
→ रस का अक्षयपात्र से कवि ने रचनाकर्म को कालजयी और अमर बताया है। कवि की रचनाएँ हमेशा अविनाशी बनी रहती हैं, वे पाठकों को हमेशा सद्संदेश देकर जीवन में सही राह दिखाती हैं।

Q. व्याख्या करें -
(i) शब्द के अंकुर फूटे
पल्लव - पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

Scanned with CamScanner

30 - कवि अपने शब्दों के माध्यम से भावभिव्यक्ति रूपी बीजों को बोता है जो एक रचना के रूप में फलित और पुष्पित होकर चारों तरफ अपनी सुंदरता तथा मिठास फैलाते हैं।

२) रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

→ कवि क्षणभर में शब्दों द्वारा अपनी भावभिव्यक्ति रूपी बीजों की रोपाई करता है लेकिन उसकी रचनाएँ अनंतकाल तक पढ़ी जाती हैं, वे जितनी अधिक पढ़ी जाती हैं उनका महत्त्व उतना ही बढ़ता जाता है। रचना-कर्म हमेशा स्थायी और शाश्वत है। कवि का साहित्य अविनाशी और कालजयी रहता है।

Scanned with CamScanner

उमाशंकर जोशी (10)

जन्म : उमाशंकर जोशी का जन्म सन् 1911 को गुजरात में हुआ था।
प्रमुख रचनाएँ : निशीथ, विश्व शांति, वसंत वर्षा, गंगोत्री, प्राचीना, अभिज्ञा, आतिथ्य, महाप्रस्थान, (एकांकी); सापनाभारा, शहीद (कहानी); विसामो, श्रावणी मेणो (उपन्यास); जीष्ठी, क्लांतकवि, म्हारासॉनेट, उघाड़ीबारी, स्वप्नप्रयाण (संपादन); वारकांजण्या (निबंध) आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।
सन् 1970 से उन्होंने संस्कृति पत्रिका का संपादन किया।
निधन : सन् 1988 में उनका देहांत हो गया।
साहित्यिक विशेषताएँ : बीसवीं सदी की गुजराती कविता और साहित्य को नया स्वर और नयी भंगिमा प्रदान करने वाले उमाशंकर जोशी का साहित्यिक योगदान संपूर्ण भारतीय साहित्य के लिए महत्त्वपूर्ण है; उन्होंने भवभूति के उत्तर रामचरित और कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम् का गुजराती में अनुवाद किया। उस समय ऐसे अनुवाद गुजराती साहित्य की अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने वाले थे। एक कवि के रूप में उमाशंकर जी ने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा, आम व्यक्ति के जीवन से परिचित कराया और एक नयी शैली प्रदान की। जीवन के सामान्य प्रसंगों पर बोलचाल की साधारण भाषा में कविता लिखने वाले भारतीय आद्य निकतावादियों में जोशी जी अन्यतम हैं। कविता के साथ-साथ साहित्य की अन्य विधाओं में भी उनका योगदान बहुमूल्य है, विशेषकर आलोचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में। निबंधकार के रूप में जोशी जी गुजराती साहित्य में बेजोड़ माने जाते हैं, उमाशंकर जोशी उन साहित्यिक व्यक्तित्वों में से एक हैं जिनका रिश्ता भारत की आजादी की लड़ाई से रहा है। आजादी की लड़ाई के दौरान वे कई बार जेल भी गए।

Scanned with CamScanner